फोसिदो; तिरिक्खमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसु उववादाभावा । पणदालीसलक्खजोयणविक्खंभेण पंचरज्जुआयामेण ट्ठिदखेत्तमाऊरिय सुक्कलेस्सियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिमणुसाणं चेव सुक्कलेस्सिदेवेसुववादुवलंभा । ते तत्थ ण उप्पजंत्ति त्ति कधं णव्वदे ? पंच चोद्दसभागुवदेसाभावादो उववादपरिणदअसंजदसम्मादिट्ठीहि छ चोद्दसभागा फोसिदा, तिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसुववादुवलंभा । सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-परिणदसुक्कलेस्सियसंजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा फोसिदा, तिरिक्खसंजदासंजदाणं सुक्कलेस्साए सह अच्चुदकप्पे उववादुवलंभा । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स मारणंतिय-उववाद णत्थि ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि१ त्ति ओघं२ ॥ १६४ ॥

लाख योजन विष्कम्भसे और पांच राजु आयामसे स्थित क्षेत्रको व्याप्त करके शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका ही शुक्ललेश्यावाले देवोंमें उपपाद पाया जाता है।

शंका --- शुक्ललेश्यावाले तिर्यंच, शुक्ललेश्यावाले देवोंमें नहीं उत्पन्न होते हैं, यह कैसे जाना?

समाधान --- चूंकि, पांच बटे चौदह भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रके उपदेशका अभाव है, इससे जाना जाता है कि शुक्ललेश्यावाले तिर्यंच जीव मरकर शुक्ललेश्यावाले देवोंमें नहीं उत्पन्न होते है ।

उपपादपदपरिणत शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंमें कुछ कम छह बटे चौदह भाग (६/१४) स्पर्श किये हैं, क्योंकि, तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका शुक्ललेश्याके साथ देवोंमें उपपाद पाया जाता है । स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिपदपरिणत शुक्ललेश्यावाले संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोने छह बटे चौदह (६/१४) भाग स्पर्श क्योंकि, तिर्यंच संयतासंयतोंका शुक्ललेश्याके साथ अच्युतकल्पमें उपपाद पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि शुक्ललेश्यावालोंके मारणान्तिक और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती शुक्ललेश्यावाले जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघकेसमान है ॥१६४॥

----

१. णवरि समुग्घादम्मि य संखातीदा हवंति भागा वा । सव्वो वा खलु लोगो फासो होदि त्ति णिद्दिट्ठो । गो. जी. ५५० ।

२. प्रमत्तादिसयोगकेवल्यन्तानां अलेश्यानां च सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

एदं सुत्तं सुगमं, तदो ण किंचि वत्तव्वमत्थि ।

एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं१ ॥१६५॥
एदं सुत्तं सुगम, वट्टमाणादीदकाले अस्सिदूण ओघम्हि परुविदत्तादो ।

अभवसिद्धिएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो२ ॥१६६॥

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । विहार वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स वि असंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; असंखेज्जरासीसु तेसिमसंखेज्जदिभागमेत्तो तत्थ तत्थ अभव्वरासी त्ति उवदेसादो । अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

यह सूत्र सुगम है, इसलिए कुछ भी अन्य वक्तव्य नहीं है ।

इसप्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१६५॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान और अतीतकालकी आश्रय करके ओघमें इसका प्ररुपण हो चुका है ।

अभव्यसिद्धिक जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? सर्वलोक स्पर्श किया है ॥१६६॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्‌घात और उपपादपदपरिणत अभव्यसिद्धिक जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकपदपरिणत अभव्यसिद्धिक जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका भी असंख्यातवा भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, असंख्यात प्रमाणवाली पंचेन्द्रियादि राशियोंमें उन उनके असंख्यातवें भागप्रमाण वहाँ वहाँ पर अर्थात् उन उन विवक्षित राशियोंमें अभव्यराशि होती है, इस प्रकार आचार्योंका उपदेश पाया जाता है । उक्त जीवोंने अतीतकालमें आठ बटे चौदह (८/१४) भाग स्पर्श किये हैं ।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

----

१ भव्यानुवादेन भव्यानां मिथ्यादृष्टयाद्ययोगकेवल्यन्तानां सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

२ अभव्यैः सर्वलोकः स्पृष्टः । स. सि. १, ८.

समत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकवलि त्ति ओघं१ ॥१६७॥

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि तिण्णि वि काले अस्सिदूण परुविदत्तादो ।

खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥१६८॥

एदस्स वट्टमाणपरुवणा खेत्तभंगा । सत्थाणपरिणदेहि खइयअसंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा । उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । तं कधं लब्भदे? बद्धाउअमणुसखइयसम्मादिट्ठीसु तिरिक्खेसुप्पज्जमाणेसु असंखेज्जदीवेसु अच्छिय सोधम्मीसाणकप्पेसु उप्पज्जमाण-

----

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१६७॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, तीनों ही कालोंका आश्रय करके ओघमें प्ररुपण किया जा चुका है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१६८॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररुपणा क्षेत्रके समान है । स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिपदपरिणत उक्त जीवोंने आठ बटे छौदह (८/१४) भाग स्पर्श किये हैं । उपपादपरिणत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।

शंका --- उपपादगत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण कैसे पाया जाता है ।

समाधान --- तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले बद्धायुष्क क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके असंख्यात द्वीपोंमें रह करके पुन: मरणकर सौधर्म और ईशानकल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले

----

१. सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टीनामसंयतसम्यग्दृष्टयाद्ययोगकेवल्यन्तानां सामान्योक्तम् । किन्तु संयतासंयताना लोकस्यासंख्येयभाग: । स. सि. १, ८.

खइयसम्मादिट्ठिछुत्तखेत्तं मणुस्सेसुप्पज्जमाणखइयसम्मादिट्ठिफोसिदखेत्तं च घेत्तूण लब्भदे॰ एदम्हि खेत्ते आणिज्जमाणे देसूणजोयणलक्खबाहल्लं रज्जुपदरं उड्ढं सत्तवग्गेण छिंदिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स बाहल्लादो संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि॰ एवं संजादे ओघत्तं कधं जुज्जदे? ण, उववादविरहिदसेसपदखेतेहि तुल्लत्तमावेक्खिय ओघत्तुववत्तीए॰

संजदासंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो॰१६९॰

एदस्सं वट्टमाणपरुपणा खेत्तभंगा॰ सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-परिणदेहि खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा फोसिदा; खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणं तिरिक्खेसु असंभवादो॰ मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो तीदे काले फोसिदो, पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभेण संखेज्जरज्जुआयदफोसणखेत्तवलंभादो॰

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे स्पर्शित क्षेत्रको, तथा वहाँसे चयकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके स्पर्शित क्षेत्रको ग्रहण करके तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है॰

इस उक्त क्षेत्रके निकालनेपर कुछ कम एक लाख योजन बाहल्यवाले राजुप्रतरको ऊपरसे सातवे वर्ग (४९) द्वारा छेदकर प्रतराकारसे स्थापित करने पर तिर्यग्लोकके बाहल्यसे संख्यातवे भाग बाहल्लवाला जगत्प्रतर होता है॰

शंका --- ऐसा होने पर सूत्रोक्त ओघपना कैसे घटित होगा?

समाधान --- नहीं, क्योंकि, उपपादपदको छोड़ शेष पदोंके क्षेत्रोंके साथ समानता देखकर ओघपना बन जाता है॰

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है॰१६९॰

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररुपणा क्षेत्रप्ररुपणाके समान है॰ स्वस्थान-स्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग, अथवा संख्यात बहुभाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंका तिर्यंचोंमें होना असंभव है॰ मारणान्तिकपदपरिणत क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा

पमत्तादिगुणट्ठाणाणं ओघभंगो, विसेसाभावा॰

सजोगिकेवली ओघं१॰१७०॰

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि परुविदत्तादो॰

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्त संजदा त्ति ओघं१॰१७१॰

एदस्सं सुत्तस्स जेण अदीद-वट्टमाणपरुवणा मूलोघम्हिं उत्तचदुगुणट्ठाण-अदीदवट्टमाणपरुवणाए तुल्ला, तेण ओघत्तं जुज्जदे॰

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी ओघं२॰१७२॰

वट्टमाणपरुवणाए सव्वपदाणं ओघत्तं होदु णाम, विसेसाभावा॰ अदीद-परुवणाए वि सत्थाणस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तुवलंभादो॰ विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि देसूणट्ठ चोद्दसभागमेत्तखेत्तुवलंभादो ओघत्तं जुज्जदे॰ किंतु

क्षेत्र अतीतकालमें स्पर्श किया है, क्योंकि, पैंतालीस लाख योजन विष्कम्भके साथ संख्यात राजुप्रमाण आयत स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है ँ प्रमत्तादि गुणस्थानोंकी स्पर्शनप्ररुपणा ओघकेसमान है, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं हैँ

सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघकेसमान हैँ१७०ँ

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, ओघमें इसका प्ररुपण किया जा चुका हैँ

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघकेसमान हैँ१७१ँ

चूंकि, इस सूत्रकी अतीत और वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररुपणा मूलोघमें कही गई उक्त चारों गुणस्थानोंकी अतीत और वर्तमानकालिक प्ररुपणाकेसमान है, इसलिए ओघपना बन जाता हैँ

औपशमिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघकेसमान हैँ१७२ँ

शंका --- वर्तमानकालिक स्पर्शनको प्ररुपणामें सर्व पदोंकेओघपना भले ही रहा आवे; क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ँ अतीतकालिक प्ररुपणामें भी सर्व पदोंकेओघपना रहा आवे; क्योंकि, अतीतप्ररुपणामें भी स्वस्थानपदका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र पाया जाता है ँ तथा, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदोंका स्पर्शनक्षेत्र भी कुछ कम आठ बटे चौदह (८/१४) भागप्रमाण पाये जानेसे ओघपना बन जाता हैँ

----

१. क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टीनां सामान्योक्तम्ँ स. सि. १, ८.

२. औपशमिकसम्यक्त्वानामसंयतसम्यग्दृष्टीनां सामान्योक्तम्ँ स. सि. १, ८.

मारणंतिय-उववादपरिणदाणमोघत्तं णत्थि, ओघम्हि उत्तं अट्ठ-चोद्दसभागमेत्तं मोत्तूण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणमेत्तफोसणखेत्तवलंभा ँ कुदो? मणुसगदिं

मोत्तूण अण्णत्थ उवसमसम्मत्तेण सह मरणाणुवलंभा ? ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादे मोत्तूण सेसपदेहि सरिसत्तमत्थि त्ति ओघत्तुववत्तीदो ँ

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो१ ँ१७३ॅ

एदस्स सुतस्स वट्टमाणपरुवणा खेत्तभंगा ँ सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदउवसमसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, मणुसगदीए चेव मारणंतियदंसणादो ँ सेससव्वगुणट्ठाणाणमोघभंगो ँ

किन्तु मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपरिणत जीवोंकेओघपना नहीं बनता है, क्योंकि, ओघमें कहा गया आठ बटे चौदह (८/१४) भागप्रमाण क्षेत्र छोड़कर सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणे प्रमाणवाला स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है ँ और इसका कारण यह है कि मनुष्यगतिको छोड़कर अन्यत्र उपशमसम्यक्त्वकेसाथ मरण नहीं पाया जाता है ?

समाधान --- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, इन दोनों पदोंको छोड़कर पदोंकेसाथ सदृशता है, इसलिए ओघपना बन जाता है ँ

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ँ१७३ॅ

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररुपणा क्षेत्रप्ररुणाके समान है ँ स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवांभाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ँ मारणान्तिकसमुद्घातपदपरिणत उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा

क्षेत्र स्पर्श किया है। इसका कारण यह है कि मनुष्यगतिमें ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके मारणान्तिकसमुद्धात देखा जाता है। शेष सर्व गुणस्थानोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है।

----

१. शेषाणां लोकस्यासंख्येयभाग:। स. सि. १, ८.

सासणसम्मादिट्ठी ओघं१ ॥१७४॥

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥१७५॥

मिच्छादिट्ठी ओघं ॥१७६॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि अवगदत्थाणि, ओघम्हि परुविदत्तादो। तदो एदेसिं परुवणा ण कीरदे।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो२ ॥१७७॥

एदस्स सुत्तस्स परुवणा खेत्तभंगा, समल्लीणवट्टमाणकालत्तादो।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥१७८॥

सत्थाणपरिणदेहि सण्णिमिच्छादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-

----

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१७४॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१७५॥

मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥१७६॥

ये उक्त तीनों ही सूत्र ओघमें प्ररुपित होनेसे अवगतार्थ है, अर्थात् इनका अर्थ जाना हुआ है ॰ इसलिए इनकी प्ररुपणा नहीं की जाती है॰

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई॰

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है॰१७७॰

वर्तमानकालको आश्रय करनेसे इस सूत्रकी स्पर्शनप्ररुपणा क्षेत्रप्ररुणाकेसमान है॰

संज्ञी जीवोंने अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोक स्पर्श किया है॰१७८॰

स्वस्थानस्वस्थान परिणत संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा

----

१. सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टिमिथ्याष्टीनां सामान्योक्तम्॰ स. सि. १, ८.

२. संज्ञानुवादेन संज्ञिनां चक्षुर्दर्शनिवत्॰ स. सि. १, ८.

भागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ॰ विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठचोद्दसभागा, मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो॰

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं॰१७९॰

एदेसिमोघादो ण को वि१ भेदो णत्थि,सण्णिरहिदसासणादीणमभावा॰

असण्णीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, सव्वलोगो२॰१८०॰

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि असण्णीहि तिसु वि अद्धासु सव्वलोगो फोसिदो ॰ विहारपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो तिसु वि कालेसु फोसिदो ॰ वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेतादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणे फोसिदो। तीदे पंच चोद्दसभागा त्ति वत्तव्वं।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

क्षेत्र स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थान, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंने आठ बटे चौदह (८/१४) भाग स्पर्श किये है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपद-परिणत संज्ञी जीवोंने सर्वलोक स्पर्श स्पर्श किया है।

संज्ञी जीवोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है।१७९।

इन गुणस्थानोंकी स्पर्शनप्ररुपणाका ओघस्पर्शनप्ररुपणासे कोई भेद नहीं है, क्योंकि, संज्ञित्वसे रहित सासादनादि गुणस्थानोंका अभाव है।

असंज्ञी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? सर्वलोक स्पर्श किया है।१८०।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिक और उपपादपदपरिणत असंज्ञी जीवोंने तीनों ही कालोंमें सर्वलोक स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थानपदपरिणत जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र तीनों ही कालोंमें स्पर्श किया है। वैक्रियिपदपरिणत असंज्ञी जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें स्पर्श किया है। अतीतकालमें पांच बटे चौदह (५/१४) भाग स्पर्श किये हैं, ऐसा कहना चाहिये।

इस प्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई।

----

१. प्रतिषु कोत्थि इति पाठः; म प्रतौ 'को छि' इति पाठः।

२. असंज्ञिभिः सर्वलोकः स्पृष्टः ै स. सि. १, ८.

आहाराणुवादेण आहाराएसु मिच्छादिट्ठी ओघं१ ै१८१ ै

उववादस्स रज्जुआयामो आहारणिरुद्धे ण लब्भदि, तेण सव्वलोगफोसणाभावा णोघत्तं जुज्जदे? ण, सरीरगहिदपढमसमए वट्टमाणजीवेहि आऊरिदसव्वलोगुवलंभादो ै सेसं सुगमं ै

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ै१८२ ै

एदस्स वट्टमाणपरुवणा खेत्तभंगा ै तीदकालपरुवणं भण्णमाणे फोसणोघम्हि चदुण्हं गुणट्ठाणाणं जहा उत्तं तधा वत्तव्वं ै णवरि सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ै

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ै१८३ ै

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ै१८१ ै

शंका --- आहारमार्गणाकी अपेक्षा कथन करनेपर उपपादका राजुप्रमाण आयाम नहीं पाया जाता है, इसलिए सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रके स्पर्शनका अभाव होनेसे ओधपना नहीं बनता है?

समाधान --- नहीं, क्योंकि, शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें वर्तमान जीवोंसे व्याप्त सर्वलोकके पाये जानेसे ओघपना बन जाता है ै

शेष अर्थ सुगम ही है ै

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती आहारक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ै१८२ ै

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररुपणा क्षेत्रके समान है ॰ अतीतकालकी प्ररुपणा कहनेपर स्पर्शनके ओघमें जैसा कि इन चारो गुणस्थानोका स्पर्शनक्षेत्र कहा है, उसी प्रकारसे कहना चाहिये ॰ विशेष बात यह है कि उपपादपरिणत सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है॰

आहारक जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॰१८३॰

----

१. आहारानुवादेन आहारकाणां मिथ्यादृष्टयादिक्षीणकषायान्तानां सामान्योक्तम् ॰ स. सि. १, ८.

२. सयोगकेवलिना लोकस्यासंख्येयभाग: ॰ स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्सं परुवणा अदीद-वट्टमाणेहि ओघतुल्ला ॰ णवरि सजोगकेवली पदर-लोगपूरणपदा णत्थि॰

आहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो१ ॰१८४॰

कुदो? कम्मइयकायजोगीसु सव्वेसु अणाहारियत्तुवलंभादो॰

अजोगिअणाहारपरुवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

णवरि विसेसा, अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो२ ॰१८५॰

एदं सुत्तं सुगमं॰

(एवं आहारमग्गणा समता)

एवं फोसणाणुगमो त्ति सम्मत्तमणिओगद्दारं॰

इस सूत्रकी प्ररुपणा अतीत और वर्तमान इन, दोनों कालोंकी अपेक्षा ओघप्ररुपणाके समान है। विशेष बात यह है कि सयोगिकेवलीकेप्रतर लोकपूरणसमुद्धात, ये दो पद नहीं होते हैं।

अनाहारक जीवोंमें संभवित गुणस्थानवर्ती जीवोका स्पर्शनक्षेत्र कार्मणकाययोगियोंके क्षेत्रकेसमान है। (१८४)

इस कारण यह है कि सभी कार्मणकाययोगियोंकेअनाहारकपना पाया जाता है।

अनाहारी अयोगिजिनकेस्पर्शनक्षेत्रकेप्ररुपण करनेकेलिए उत्तर सूत्र कहते हैं---

विशेष बात यह है कि अयोगिकेवलियोने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है। (१८५)

यह सूत्र सुगम है।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई।)

इस प्रकार स्पर्शानुगम नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

----

१. अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टिभि: सर्वलोक: स्पृष्ट: । सासादनसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभाग: एकादश, चतुर्दशभागा वा देशोना: । सयोगिकेवलीनां लोकस्यासंख्येयभाग: सर्वलोको वा। स. सि. १, ८.

२. अयोगिकेवलिनां लोकस्यासंख्येयभाग: । स. सि. १, ८.